बाड़मेर

(संक्षिप्त परिचय)

बाड़मेर जिला दक्षिण पश्चिमी राजस्थान के थार मरूस्थल के मध्य स्थित है। 12वीं शताब्दी में परमार शासक बाहड़राव द्वारा प्राचीन बाड़मेर को बसाया गया था, जिसकी स्थिति जूना बाड़मेर किराड़ू के पहाड़ो के पास थी। विक्रम संवत् 1608 में जोधपुर के शासक रावल मालदेव ने जूना बाड़मेर पर अधिकार कर लिया व वहां का सरदार भीमा जैसलमेर भाग गया। भीमा ने जैसलमेर के भाटी राजपूतों के साथ सैन्य बल मजबूत कर मालदेव के साथ युद्ध किया एवं पुनः पराजित होने पर बापड़ाउ के ठिकाने पर 1642 में सुरम्य पहाड़ियो की तलहटी में वर्तमान बाड़मेर नगर बसाया।

बाड़मेर प्रारम्भ से ही भारत एवं मध्य एशिया के मध्य ऊँटो के कारवां से होने वाले व्यापारी मार्ग पर होने से बाड़मेर आर्थिक रूप से समृद्ध रहा। सन् 1899 में बाड़मेर जोधपुर रेल्वे सम्पर्क से जुड़ा, जिससे रेल्वे ने बाड़मेर को भारत के अन्य शहरों से जोड़कर विकास के नये आयाम प्रदान किए। भारत–पाक अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित होने से सन् 1965 एवं 1971 के भारत–पाक युद्ध के दौरान बाड़मेर का नाम भारत के मानचित्र पर विशेष रूप से उभरा। वर्तमान में बाड़मेर में निकले तेल के भण्डार एवं अन्य खनिज से बाड़मेर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सफल हुआ है। बाड़मेर लोक कला, संस्कृति, हस्तकला, परम्परागत मेले–त्यौहार की दृष्टि से भी सम्पन्न है। बाड़मेर में कपड़े पर हाथ से रंगाई–छपाई, आरीतार, जूट पट्टी, गलीचा उद्योग, कांच–कशीदाकारी, ऊनी पट्टू एवं दरी बुनाई, लकड़ी पर नक्काशी का कार्य बेजोड़ है। बाड़मेर में निर्मित कलात्मक वस्तुओं ने अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अपनी पहचान बनाई है।

बाड़मेर शहर की प्राचीन बनावट, सुरम्य पहाड़ियों के मध्य निर्मित जलकुण्ड, पहाड़ियों के शिखरों पर निर्मित देवी–देवताओ के प्राचीन मन्दिर, जैन धर्मावलम्बियों द्वारा नगर में निर्मित जैन मन्दिर एवं बाड़मेर जिले के विस्तृत क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर निर्मित प्राकृतिक सौन्दर्य, पुरातत्व महत्व के स्थल, मन्दिर, भवन, रेतीले धोरे, लोक कला संस्कृति पर्यटकों के लिए आर्कषण एवं आस्था के प्रमुख केन्द्र एवं दर्शनीय स्थल है।